TEST CODE: 21032

FIAS – 2019 – GS32A

31384_21032_1910034941_(2019-08-03 01:01:40)

ForumIAS
ACADEMY

GENERAL STUDIES

Name Of Candidate	RHEECHA RATNAM		
Email Id.	[redacted]	Roll No.	1910034941
Mobile No.	[redacted]	Date:	31/7/2019

Time Allowed: One and Half Hours

Maximum Marks: 125

INDEX TABLE

Q. No.	Max. Marks	Marks Obtained
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
Total Marks:		

Remarks:

INSTRUCTION

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Email, Roll No., Mobile).
2. There are TEN questions printed in ENGLISH.
3. All questions are compulsory.
4. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
5. Answers must be written in the medium authorized in the admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided.
6. Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
7. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum Answer Booklet must be clearly Struck off.

Start Time| 6:00PM		**End Time|** 7:30PM	
Mode Of Examination :		**Online** ☑	**Offline** ☐
ECN CODE:		**Evaluation Date:**	

ForumIAS Offline Centre, 2nd Floor, IAPL House, Opp. Metro Pillar 95, Karol Bagh, Delhi – 110005

Scanned by CamScanner

Parameters	Excellent	Very Good	Good	Average	Poor	Very Poor
Language						
Structure						
Presentation						
Handwriting						
Content						
Attempt						

ADDITIONAL COMMENTS

2018 © ForumIAS | All rights reserved

Scanned by CamScanner

ForumIAS

(Don't Write anything in this Area)

31384_21032_1910034941_(2019-08-03 01:01:40)

1. Rajput style of painting, influenced by mughal techniques, was largely a depiction of lives, myth, romance and bhakti. Examine

(10 Marks, 150 Words)

मध्यकाल में राजपूत चित्रकला शैली का विकास मुगल दरबार के चित्रकारों के प्रवसन के कारण हुआ।

• राजपूत चित्रकला : मुगल तकनीक से प्रभावित

1.) चित्रकला में गहरे नीले रंगों का प्रयोग
L पर्शियन शैली का प्रभाव।

2.) चित्रकला में वनस्पति व जीव-जंतुओं का चित्रण। से प्रभावित।

3.) पोशाक – मुगल चित्रकला

4.) चित्र निर्माण शैली

* राजपूत चित्रकला शैली : प्रकार
- मेवाड़ शैली
- किशनगढ़ शैली
- मारवाड़ शैली
- बीकानेर शैली
- कोटा शैली
- बूंदी शैली

* राजपूत चित्रकलाओं में विभिन्न विषयवस्तुओं का चित्रण, जो निम्नलिखित है :-

1) भक्ति :- कृष्ण लीला, राधा-कृष्ण, जो वैष्णव धर्म से प्रभावित।
उदाहरण :- बूंदी शैली में राधा-कृष्ण।

2.) प्रणय दृश्य :- इसमें भी राधा-कृष्ण के चित्र बनाए गए। साथ ही रागिनी/नायिका चित्र।

Call us: 011-49878625, 9821711605
Blog : blog.forumias.com

Visit us : www.forumias.com
Email : student@forumias.academy

Scanned by CamScanner

- साथ ही रागमाला चित्र।

3.) <u>जीवन के दृश्य</u> – जीवन से जुड़ी विभिन्न घटनाओं के चित्रों का निर्माण।

उदाहरण :- बीकानेर शैली में राजदरबार के दृश्यों का चित्रण।

4.) <u>कल्पनाएं</u> - विभिन्न प्रकार की कल्पनाओं – बणी - ठणी - किशनगढ़ शैली में नायिका, इत्यादि का चित्रण किया गया।

- इस शैली के चित्रों में मुगल कला का प्रभाव स्पष्टत: दृष्टिगोचर था, इसके बावजूद इनमें पर्याप्त मौलिकता भी बनी रही।

नायिका (बणी-ठणी) की तीखी नाक व चेहरे का चित्रण, राजपूत शैली की विशिष्टताओं में से एक है।

Feedback(For OFFICE use only)

Structure	
Question Interpretation	
Content	
Total	

Scanned by CamScanner

2. Developments in religion in Ancient India proceeded along the traditional lines as well as along the paths of unorthodoxy. Explain

(10 Marks, 150 Words)

प्राचीन भारत से आधुनिक युग तक धर्म के विकास में निरंतरता व परिवर्तन के तत्व विद्यमान रहे हैं।

* **प्राचीन भारत में धर्म का विकास : परंपरागत रूप से**

- पाषाण युग में मातृदेवी की पूजा, अग्निकुंड के साक्ष्य प्राप्त हुए। (नवादाटोली - ताम्रपाषाण)
- सिंधु घाटी सभ्यता में मातृदेवी पूजा, लिंग पूजा, शुभ प्रतीक - स्वास्तिक इत्यादि का विकास हुआ।
- वैदिक काल में प्रकृतिवादी बहुदेववाद, यज्ञों, कर्मकांडों की प्रमुखता दी गई। उदाहरण :- इंद्र, वरुण की पूजा।
- कालांतर में कर्मकांड जटिल होते गए तथा नवीन पंथों की संकल्पना का विकास
  - वैष्णववाद → वासुदेव, विष्णु, श्रीलक्ष्मी की पूजा।
  - शैववाद → शिव, उमा की पूजा
  - मातृपूजा → दुर्गा की पूजा
- बाद के वर्षों, मौर्योत्तर व गुप्तकाल में इन तीनों पंथों का विकास तथा मंदिर निर्माण व प्रतिमा पूजा पर बल।

Scanned by CamScanner

- आज भी हिन्दू धर्म में 'मंदिर' 'मूर्ति-पूजा' का महत्व।

* प्राचीन भारतीय धर्म विकास : गैर रूढ़िवादी

→ 600-300 ई॰ पू॰ के मध्य उपनिषदों के रूप में 'ब्रह्म' व 'आत्मा' की संकल्पना, जिसमें कर्मकांडों की आलोचना की गई।

→ श्रमण संप्रदायों - बौद्ध, जैन द्वारा, वेदों की सत्ता को नकारना।
 └ साथ ही इन दोनों के दर्शन में 'अनीश्वरवाद' पर बल।

- इन दर्शनों के मूल में 'निर्वाण' प्राप्ति।
- इनके प्रसार के साथ ही 'चैत्यों', विहारों व स्तूपों का निर्माण हुआ।

फलस्वरूप भारत में धर्म का विकास दोनों प्रकार से हुआ, जिसने इसे 'अहिंसा' 'सहिष्णुता' संबंधी मूल्य प्रदान किए।

Feedback(For OFFICE use only)

Structure	
Question Interpretation	
Content	
Total	

3. Discuss the impact of Persian and Greek invasions on Indian art and architecture.

(10 Marks, 150 Words)

600-300 ई॰पू॰ के दौरान भारतीय उपमहाद्वीप पर ग्रीक व फारसी / पर्शियन आक्रमण, जो मुख्यत: उत्तर-पश्चिम राज्य तक सीमित रहे। हालांकि इनका प्रभाव भारतीय कला व स्थापत्य कला पर दृष्टिगोचर होता है।

* पर्शियन आक्रमण का प्रभाव : भारतीय कला व वास्तुकला पर

1.) भारतीय कला – मौर्य काल में निर्मित स्तंभों को अखमनी साम्राज्य से प्रभावित बताया जाता है।

- फारस में स्तंभों का निर्माण, पॉलिशदार सतह व उल्टे कमल के साथ।
- हालांकि इनके स्तंभ विभिन्न पत्थरों से निर्मित।

> निहाररंजन राय मौर्यकालीन स्तंभों पर पर्शियन प्रभाव को नकारते हैं –
> मौर्य स्तंभ – उल्टा कमल शीर्ष पर, एकाश्म पत्थर से निर्मित।

2.) भारतीय वास्तुकला – उत्तर-पश्चिम में स्थापत्य कला को प्रभावित किया।

* ग्रीक आक्रमण का प्रभाव : भारतीय कला व वास्तुकला पर

Scanned by CamScanner

31384_21032_1910034941_(2019-08-03 01:01:40)

1.) पश्चिमोत्तर में खरोष्ठी लिपि (पर्शियन प्रभाव) व ग्रीक भाषा का प्रचलन प्रारंभ हुआ।

2.) मूर्तिकला की गांधार शैली
↳ ग्रीक - रोमन शैली से प्रभावित।
↳ महायान बौद्ध धर्म के विकास पश्चात बुद्ध व बोधिसत्वों की मूर्तियों का निर्माण
↳ बुद्ध की मुखाकृति, ग्रीक देवता अपोलो के समान।

3.) इसके अतिरिक्त पश्चिमोत्तर में मूर्ति पूजा, स्तूप निर्माण शैली पर भी ग्रीक प्रभाव।

इन आक्रमणों का राजनीतिक - आर्थिक प्रभाव सीमित रहा, किंतु सांस्कृतिक प्रभाव की भी तात्कालिक अभिव्यक्ति नहीं हुई, तथा गांधार शैली का विकास कुषाण युग में ही हुआ।

Feedback(For OFFICE use only)

Structure	
Question Interpretation	
Content	
Total	

Scanned by CamScanner

31384_21032_1910034941_(2019-08-03 01:01:40)

4. The concept of Shramanic religions, with particular reference to Buddhism, had their roots in Upanishadic ideas. Discuss.

(10 Marks, 150 Words)

श्रमण (परंपरा) का अर्थ है - वह व्यक्ति जो जीवन व मृत्यु के चक्र से मुक्ति हेतु श्रम कर रहे हो।

600-300 ई.पू. के दौरान उपमहाद्वीप में श्रमण परंपरा - जैन, बौद्ध, आजीविक इत्यादि का विकास हुआ।

* श्रमण परंपरा व उपनिषदों के विचारों में समानताएं

1.) मोक्ष/ निर्वाण प्राप्ति व इसका मार्ग प्रमुख लक्ष्य।

2.) जन्म - मृत्यु के चक्र से मुक्ति प्राप्त करना।

3.) कर्मफलवाद का सिद्धांत।

हालांकि इसके बावजूद श्रमण परंपरा नास्तिक, जो वेदों की सत्ता को नकारती हैं।

* बौद्ध धर्म व दर्शन : उपनिषदों का प्रभाव

1.) अनीश्वरवाद - बुद्ध के अनीश्वरवादी सिद्धांत को कठोपनिषद से प्रभावित माना जाता है।

2.) संसार को दुःखमय मानना - उपनिषदों में जगत को दुःखमय माना गया।

3.) निर्वाण प्राप्ति ही मानव जीवन का लक्ष्य, यह विचार उपनिषदों के (मोक्ष प्राप्ति) से प्रभावित

Scanned by CamScanner

31384_21032_1910034941_(2019-08-03 01:01:40)

* बौद्ध धर्म/दर्शन में इसके बावजूद पर्याप्त मौलिकता विद्यमान है :-

बौद्ध दर्शन	उपनिषद्
→ नास्तिक - वेदों की सत्ता को नकारा।	→ वेदांत - वेदों के अंतिम भाग
→ अनात्मवादी दर्शन - आत्मा के अस्तित्व को अस्वीकार।	→ उपनिषदों में 'ब्रह्म' व 'आत्मा' संबंध, मूल प्रश्न।
→ चार आर्य सत्य व आष्टांगिक मार्ग, नवीन विचार।	→ उपनिषदों में इनका उल्लेख नहीं।

ऐसे में कहा जा सकता है कि श्रमण परंपरा में उपनिषदों के विचारों से कुछ समानता होने के बावजूद पर्याप्त अंतर विद्यमान था।

Feedback(For OFFICE use only)

Structure	
Question Interpretation	
Content	
Total	

Scanned by CamScanner

5. Describe the developments in science and technology during Mughal times.

(10 Marks, 150 Words)

मुगल काल के दौरान विज्ञान व तकनीक के विकास पर लिखित स्रोतों व संरचनाओं से जानकारी प्राप्त होती है।

* मुगल काल के दौरान विज्ञान का विकास :-

1.) नवीन सौर कैलेंडर का निर्माण, अकबर के शासन - काल में।

2.) समय मापन — जयसिंह द्वारा जयपुर में जंतर- मंतर का निर्माण।

3.) खगोलशास्त्र, विज्ञान व गणित की शिक्षा।

— हालाँकि इस काल के दौरान किसी नवीन वैज्ञानिक सिद्धांत या गणित सूत्र का प्रतिपादन नहीं हुआ।

* मुगल काल के दौरान तकनीकी विकास :-

1.) वस्त्र उद्योग — चरखे का प्रयोग, जिससे कताई कार्य में तीव्रता।

— साथ ही धुनकी का प्रयोग।

2.) काँच निर्माण — इस काल के दौरान भारत में काँच निर्माण तकनीक का विकास हुआ,

3.) कृषि तकनीक — 'रहट' का प्रयोग,

Scanned by CamScanner

(Don't Write anything in this Area)

31384_21032_1910034941_(2019-08-03 01:01:40)

– बाबर की आत्मकथा में रहट के प्रयोग (शामिल) का वर्णन।

– नहरों का निर्माण (शाहजहाँ द्वारा)

4.) धातु-शोधन तकनीक – इस काल के दौरान धातु-शोधन तकनीक में प्रगति हुई।

5.) भवन निर्माण तकनीक – मेहराब व गुंबदों का निर्माण वैज्ञानिक तरीके से।

– साथ ही मेहराबों व गुंबदों के पूर्ववर्ती तकनीक में सुधार (डाट प्रणाली)

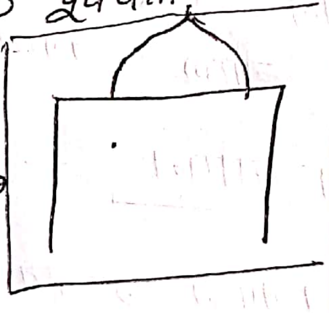

– उदाहरण :- ताजमहल में गुंबद, मीनारें, उत्कृष्ट शैली।

6.) अनेक अतिरिक्त नवीन फसलों का उत्पादन – मक्का, आलू इत्यादि तथा गुलाब के इत्र की खोज जैसी गतिविधियाँ भी हुईं।

कुल मिलाकर उपमहाद्वीप में तकनीक के क्षेत्र में विकास हुआ, साथ ही वैज्ञानिक प्रगति भी निरंतर रही।

Feedback(For OFFICE use only)

Structure	
Question Interpretation	
Content	
Total	

Scanned by CamScanner

(Don't Write anything in this Area)

31384 21032 1910034941 (2019-08-03 01:01:40)

6. Any account of ancient India is incomplete without referring to the two dynasties of South India i.e. the Pallavas and the Cholas. Give an account of their contribution to art, architecture and administration.

(15 Marks, 250 Words)

आरंभिक मध्यकाल (600-1200 ई०) के दौरान दक्षिण भारत में पल्लव व चोल वंशों के द्वारा राज्य की स्थापना हुई।

- उपमहाद्वीप में प्रशासन, कला व वास्तुकला के क्षेत्र में इन दोनों शासक-वंशों ने महत्वपूर्ण योगदान दिए।

* पल्लव काल : प्रशासन, कला व वास्तुकला में योगदान

1.) प्रशासन :- पल्लव राज्य, विभिन्न केंद्रों में विभाजित।

- स्थानीय संस्थाओं का विकास, पल्लव शासन काल में प्रारंभ हुआ।

- केंद्रीकृत राज्य स्थापना का प्रयास किया।

2.) कला :- (A) भित्तिचित्र कला :- पल्लव शासकों के अधीन दक्षिण भारत में चित्र कला का विकास

उदाहरण :- कांचीपुरम के कैलाशनाथ मंदिर में सोमस्कंद का चित्र।

(B) धातु शिल्पकला — धातु शिल्प कला के विकास को पल्लव शासकों द्वारा प्रोत्साहन।

Scanned by CamScanner

31384_20032_1910034941_(2019-08-03 01:01:40)

– शैव नयनार तथा वैष्णव अलवार संतों की कांस्य प्रतिमाओं का निर्माण व मंदिरों में स्थापना।

3) वास्तुकला :- (A) गुफा स्थापत्यकला – महेंद्रवर्मन I द्वारा दक्षिण भारत में गुफा स्थापत्यकला को प्रोत्साहन।

– बाद के वर्षों में नरसिंहवर्मन-I द्वारा भी इसे प्रोत्साहन।

उदाहरण :- महाबलिपुरम में गुफा मंदिर।

(B) मंदिर निर्माण शैली :- द्रविड़ वास्तुकला का प्रारंभ तथा विकास, पल्लव शासकों के अधीन

उदाहरण :- महाबलिपुरम के तटीय मंदिर, कांचीपुरम का कैलाशनाथ मंदिर।

द्रविड़ शैली के मंदिर

* चोल शासन : प्रशासन, कला व वास्तुकला में योगदान

1.) प्रशासन :- सुब्बारायलु के अनुसार चोल शासकों द्वारा केंद्रीकृत राज्य की स्थापना,

– चोल साम्राज्य → मंडलम् → वलनाडु → नाडु

– स्थानीय निकाय – गैर ब्राह्मण गाँव ('उर'), ब्राह्मण ग्राम ('सभा') का विकास (उत्तरमेरूर अभिलेख से ज्ञात)

– निगमित निकायों, नाट्टार (नाडु) व नगरत्तार (व्यापार) की प्रशासन में महत्वपूर्ण भूमिका

Scanned by CamScanner

(Don't Write anything in this Area)

31384_21032_1910034941_(2019-08-03 01:01:40)

2.) ... के अधीन भी जारी रही।

(A) <u>भित्तिचित्र कला</u> – बृहदेश्वर मंदिर में शिव नटराज, राजराज का चित्र।

(B) <u>कांस्य मूर्तिकला</u> – चोल शासन-काल के दौरान अपने उत्कृष्ट स्तर पर पहुँची।

उदाहरण :- शिव नटराज

3.) <u>वास्तुकला</u> :- चोल शासकों के अधीन द्रविड़ शैली का विकास।

– बृहदेश्वर मंदिर का निर्माण, जो द्रविड़ शैली में निर्मित मंदिरों का सर्वोत्तम उदाहरण।

↳ गोपुरम्

↳ चारदीवारी के अंदर

↳ पिरामिड शैली में शिखर

इस प्रकार इन दोनों राज्यों के अंतर्गत प्रशासन, कला व वास्तुकला समृद्ध हुई।

<u>Feedback(For OFFICE use only)</u>

Structure	
Question Interpretation	
Content	
Total	

Scanned by CamScanner

anything in this Area)

31384_21032_1910034941s (2019-08-03 01:01:40)

7. How did religious movements such as Sufism, Sikhism and Bhaktism paved way for the evolution of a composite culture in India.

(15 Marks, 250 Words)

मध्यकाल के दौरान भारत में सूफीवाद - सिखधर्म - भक्तिवाद ने समग्र संस्कृति के निर्माण को जन्म दिया।

* भारत की समग्र संस्कृति के उद्भव में धार्मिक आंदोलनों की भूमिका :-

1.) धार्मिक विचारों का आदान - प्रदान

→ सूफी संत, नाथपंथियों व योगियों के 'योग' (प्राणायाम) संबंधी विचारों से प्रभावित थे।

→ वहीं सिख धर्म में 'एकेश्वरवाद, निराकार सत्ता' की जड़ें, इस्लाम व सूफी धर्म से प्रभावित।

→ 'भक्ति' के मूल में भी 'ईश्वर-भक्त' संबंध, तथा भक्ति की सगुण अथवा निर्गुण धारा, दोनों द्वारा 'एकेश्वरवाद' को प्रोत्साहन
उदाहरण :- कबीर 'राम', तुलसीदास 'राम'

2.) भाषा का विकास :- सूफी संतों द्वारा भारतीय क्षेत्रीय भाषाओं के विकास में महत्वपूर्ण योगदान
उदाहरण :- बाबा फरीद द्वारा पंजाबी भाषा विकास।

Call us: 011-49878625, 9821711605
Blog : blog.forumias.com
Visit us : www.forumias.com
Email : student@forumias.academy

Scanned by CamScanner

31384_21032_19100349419_(2019-08-03 01:01:40)

- यहाँ हिंदी के सर्वप्रथम रचना 'पद्मावत' मलिक मोहम्मद जायसी द्वारा, जो सूफी विचारों से प्रभावित

3.) कला क्षेत्र में आदान-प्रदान – सूफी दरगाहों पर 'कव्वाल' गायन, 'ख्याल' को बढ़ावा।

– अमीर खुसरो का महत्वपूर्ण योगदान।

– वहीं भक्ति आंदोलन व सिख धर्म द्वारा भी कीर्तन गायन को बढ़ावा।

उदाहरण :- वृंदावन – सखी संप्रदाय ↓ हरिदास → तानसेन के गुरु

- इस प्रकार उत्तर भारत में संगीत सूफी-भक्ति-सिख सभी से प्रभावित हुआ।

4.) धर्मस्थलों का भ्रमण :- सूफी खानकाहों पर विभिन्न धर्म के लोग जाते थे।

उदाहरण :- निजामुद्दीन औलिया के पास सभी धर्मों के लोगों का आगमन।

– आज भी सूफी दरगाहों पर सभी धर्मों के लोगों का जियारत के लिए आना, इसी परंपरा का अनुगामी है।

5.) शासकों पर प्रभाव – विशेषकर अकबर पर इस समन्वयकारी प्रक्रिया का सर्वाधिक प्रभाव पड़ा।

Scanned by CamScanner

31384_21032_1910034941 (2019-08-03 01:01:40)

- फलस्वरूप अकबर ने 'सुलह-ए-कुल' की नीति को अपनाया।
- सभी धर्म के विद्वानों को इबादतखाना में सम्मिलित बहस हेतु बुलाया जाता।

6.) वास्तुकला पर – इस समन्वयकारी प्रक्रिया का प्रभाव 'इंडो-इस्लामिक' शैली के विकास के रूप में सामने आया।

उदाहरण :- फतेहपुर सीकरी में 'पंचमहल'

- इस प्रक्रिया के कारण ही भारत में 'गंगा-जमुनी' संस्कृति का उद्भव हुआ, जिसने स्वतंत्रता के दौरान भारतीय राष्ट्रवाद के 'विविधता में एकता' के विचार को बढ़ावा दिया।

Feedback(For OFFICE use only)

Structure	
Question Interpretation	
Content	
Total	

Scanned by CamScanner

31581_21032_1910034941_(2019-08-03 01:01:40)

8. The spread of Indian culture and civilization in various parts of the world was not spread by means of conquest but by means of voluntary acceptance of cultural and spiritual values of India. Discuss.

(15 Marks, 250 Words)

भारतीय सभ्यता व संस्कृति का विस्तार विश्व के विभिन्न देशों में हुआ, हालांकि आधुनिक युग की साम्राज्यवादी नीति के विपरीत यह आदान-प्रदान परस्पर संवाद के द्वारा हुआ।

* भारतीय सभ्यता व संस्कृति का प्रसार :-

1.) मौर्य काल :- अशोक द्वारा अपने पुत्र महेन्द्र व पुत्री संघमित्रा को 'बोधि वृक्ष की शाखा' के साथ श्रीलंका भेजना → 'सांस्कृतिक डिप्लोमेसी' का प्रयोगात्मक उदाहरण।

— श्रीलंका में बौद्ध धर्म का प्रसार हुआ।

• साथ ही अशोक के अभिलेखों में 5 शासकों व राज्य के नाम, जहाँ 'धम्मविजय' हेतु दूत भेजे गए। उदाहरण :- सीरिया, मकदूनिया।

2.) मौर्योत्तर काल — कुषाण शासकों के अधीन 'रेशम मार्ग' का बड़ा भाग।

— इन क्षेत्रों द्वारा चीन में बौद्ध भिक्षुओं का प्रवेश तथा वहाँ बौद्ध धर्म का प्रसार।

3.) दक्षिण-पूर्व एशिया में भारतीय व्यापारियों व शासकों द्वारा भारतीय सभ्यता व संस्कृति का प्रसार।

Scanned by CamScanner

उदाहरण :- अंकोरवाट, कंबोडिया।

* विदेशों में भारतीय सभ्यता व संस्कृति के प्रसार हेतु अपनाए गए तरीके :-

1.) दूतों के माध्यम से
↳ अशोक द्वारा प्रयुक्त विधि।

2.) भिक्षुओं के माध्यम से
↳ व्यापारिक मार्गों, पर्वतीय प्रदेशों में भिक्षुओं द्वारा धर्म का प्रसार।
उदाहरण :- कुमारजीव नाम बौद्ध भिक्षु द्वारा चीन में बौद्ध धर्म का प्रसार।

3.) विदेशी यात्रियों द्वारा - ह्वेन त्सांग, फाह्यान जैसे चीनी यात्री, बौद्ध धर्मस्थलों, व बौद्ध स्रोतों के संकलन हेतु भारत आए।

4.) व्यापारियों - श्रेणियों द्वारा - दक्षिण-पूर्व एशिया, ईरान में भारतीय व्यापारियों द्वारा भारतीय सभ्यता व संस्कृति का प्रसार।
उदाहरण :- बोरोबोदुर मंदिर (दक्षिण-पूर्व एशिया)

5.) भारतीय धर्मशास्त्रों के अनुवाद द्वारा
→ अल-बिरूनी व अन्य यात्रियों द्वारा

Scanned by CamScanner

भारतीय ज्ञान का अनुवाद।

- इस प्रकार प्राचीन में ही भारत में अनेक सभ्यता व संस्कृति से जुड़े मूल्यों के प्रसार हेतु आक्रमक सैन्य नीति की जगह 'नैतिक नीति' (अशोक - 'धम्मविजय') को बढ़ावा दिया।
- इसके कारण एशिया के विभिन्न देशों में बौद्ध धर्मावलंबियों की बड़ी संख्या उपस्थित है।
  उदाहरण :- म्यांमार, जापान में।
- साथ ही रामायण, महाभारत की कथाएं, विदेशों में भी प्रचलित।
  उदाहरण :- इंडोनेशिया में रामकथा,

सांस्कृतिक डिप्लोमेसी की यह प्रक्रिया, वर्तमान युग के लिए भी बेहद प्रासंगिक है।

Feedback(For OFFICE use only)

Structure	
Question Interpretation	
Content	
Total	

Scanned by CamScanner

31384_21032_1910034941_(2019-08-03 01:01:40)

(Don't Write anything in this Area)

9. Do you agree with the view that the growth of vernacular literature in the 19th and the 20th centuries paved the way for social reform and cultural revival in India?

(15 Marks, 250 Words)

देशी भाषा साहित्यों के (19वीं व 20वीं सदी) प्रकाशन में वृद्धि को अक्सर भारत के 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' से जोड़कर देखा जाता है।

साथ ही इन साहित्यों को धार्मिक-सामाजिक सुधारों के प्रति शिक्षित भारतीयों की अभिव्यक्ति कहा जाता है। (सुमित सरकार)

* भारत में देशी भाषा साहित्यों का विकास : सामाजिक सुधार आंदोलनों पर प्रभाव

1) बांग्ला साहित्य
- राजा राममोहन राय द्वारा 'उपनिषदों' का बांग्ला अनुवाद, ताकि इनके सिद्धांतों से आम जन परिचित हो।
- विद्यासागर द्वारा भी धार्मिक ग्रंथों का बांग्ला अनुवाद
- बाद के वर्षों में भी यह प्रवृत्ति जारी रही, जिसका उद्देश्य
  - हिंदू धर्म में व्याप्त बहुदेववाद, मूर्तिपूजा की जगह एकेश्वरवाद को बढ़ावा।
  - सुधारों को सामाजिक स्वीकृति दिलाना। उदाहरण :- सती प्रथा उन्मूलन हेतु हिंदू धर्मग्रंथों का प्रयोग।

Scanned by CamScanner

2.) मराठी साहित्य – महाराष्ट्र में धर्मीय समाज के लेखकों द्वारा मराठी साहित्यों में हाँफि की सामाजिक सुधारों से जोड़ा गया।

– ज्योतिराव फूले द्वारा 'गुलामगीरी' की रचना। मराठि में, जाति-प्रथा पर प्रहार।

– विधवा पुनर्विवाह को प्रोत्साहन, बाल विवाह का विरोध, मराठी साहित्यों द्वारा।

* **भारत में देशी भाषा साहित्यों का सांस्कृतिक पुनरुत्थान पर प्रभाव**

1.) बंगला साहित्य – बंकिम चंद की 'वंदेमातरम्' ने भारत-माता की छवि को गढा।

– 'आनंदमठ' द्वारा भारतीयों की पराजय का वर्णन

– बाद के वर्षों में अरविंद घोष ने सांस्कृतिक पुनरुत्थान हेतु विवेकानंद के द्वारा प्रस्तुत विचारों को अपनाया।

उदाहरण :- भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठता पर बल।

2.) मराठी साहित्य – तिलक द्वारा रचित 'गीता रहस्य' व अन्य रचनाओं द्वारा भारतीय संस्कृति व अतीत का गौरवगान किया गया।

3.) हिंदी साहित्य – भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा 'भारत दुर्दशा' की रचना, साथ ही स्वदेशी के प्रयोग को बल देने का किया।

Scanned by CamScanner

(Don't Write anything in this Area)
31384_21032_4910034941_(2019-08-03 01:01:40)

दयानंद सरस्वती द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश का 'वेदों की ओर लौटो' तथा 'वास्तविक वैज्ञानिक दृष्टिकोण वेदों में अन्तर्निहित' जैसे विचारों ने सांस्कृतिक पुनरुत्थानवाद को बढ़ावा दिया।

इस प्रकार देशी भाषायी साहित्यों ने भारत में सामाजिक सुधारों व सांस्कृतिक पुनरुत्थान द्वारा देशव्य जनता के आत्मविश्वास के बढ़ाने में अपना योगदान दिया।

Feedback(For OFFICE use only)

Structure	
Question Interpretation	
Content	
Total	

Scanned by CamScanner

(Don't Write anything in this Area)

31384_21032_1910034941 (2019-08-03 01:01:40)

10. "Dance is a complete art encompassing within its scope all other forms of art – music, sculpture, poetry and drama." Analyze giving examples.

(15 Marks, 250 Words)

Call us: 011-49878625, 9821711605
Blog : blog.forumias.com
Visit us : www.forumias.com
Email : student@forumias.academy.

Scanned by CamScanner

Feedback(For OFFICE use only)

Structure	
Question Interpretation	
Content	
Total	

Forum IAS

Mentor Feedback Questions

1 ....

2 ....

3 ....

4 ....

5 ....

Test Goal

1 .... ☐
....

2 .... ☐
....

3 .... ☐
....

Outcomes

....
....
....
....
....
....

Marking Scheme

Marks	Good	Average	Below Average
10 Marker	3.75 – 5.0	3.0 – 3.5	< 3.0
15 Marker	5.75 – 7.0	4.0 – 5.5	< 4.0

*Subject to change without prior notice.

For any suggestions and/or grievances regarding evaluation, please mail to : **asif@forumias.academy**

Scanned by CamScanner